# ओनि जज का पलायन

## मार्था वाशिंगटन के गुलाम को आजादी मिली

एमिली अर्नोल्ड मिककुली

हिंदी: इंदूजी



# ओनि जज का पलायन

## मार्था वाशिंगटन के गुलाम को आजादी मिली

एमिली अर्नोल्ड मिककुली

हिंदी: इंदूजी



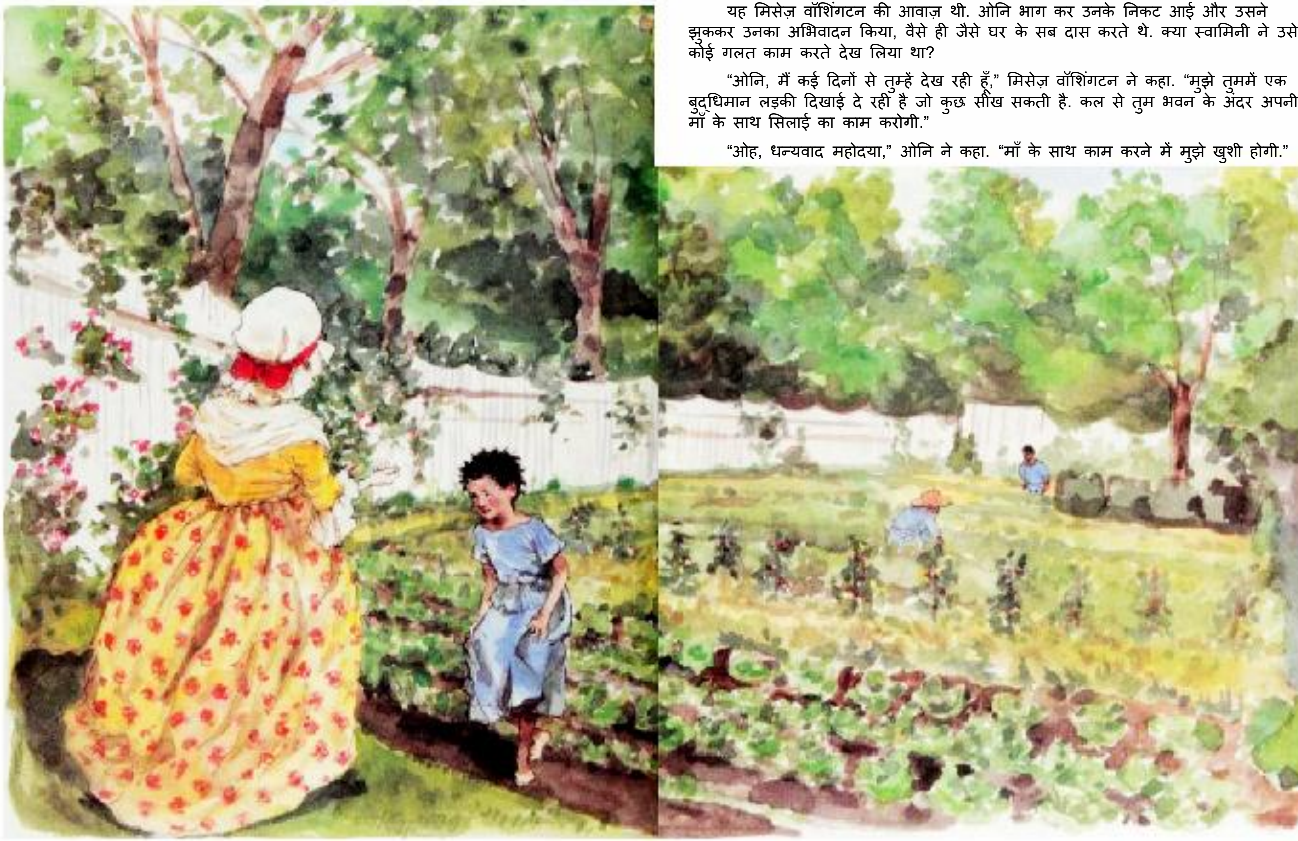


“ओनि! बच्ची, इधर आओ.”

यह मिसेज़ वॉशिंगटन की आवाज़ थी. ओनि भाग कर उनके निकट आई और उसने झुककर उनका अभिवादन किया, वैसे ही जैसे घर के सब दास करते थे. क्या स्वामिनी ने उसे कोई गलत काम करते देख लिया था?

“ओनि, मैं कई दिनों से तुम्हें देख रही हूँ,” मिसेज़ वॉशिंगटन ने कहा. “मुझे तुममें एक बुद्धिमान लड़की दिखाई दे रही है जो कुछ सीख सकती है. कल से तुम भवन के अंदर अपनी माँ के साथ सिलाई का काम करोगी.”

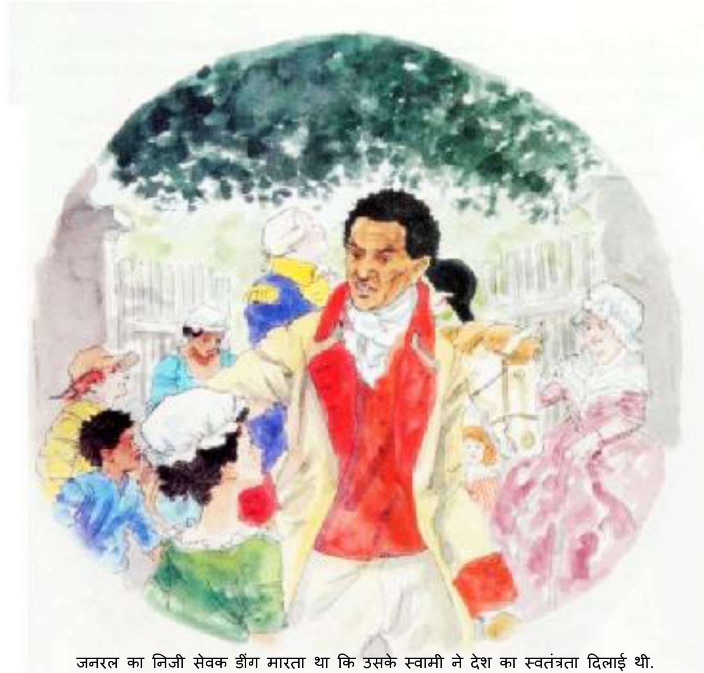
“ओह, धन्यवाद महोदया,” ओनि ने कहा. “माँ के साथ काम करने में मुझे खुशी होगी.”



ओनि जानती थी कि माउंट वरनॉन पर स्थित उस विशाल भवन के अंदर काम करने के लिए उसे क्यों चुना गया था. उसके पिता श्वेत थे और वह स्वयं अश्वेत नहीं, सांवले रंग की थी. लेकिन वह बुद्धिमान भी थी और उसे नई चीज़ें सीखना पसंद था. बहुत शीघ्र ही वह सुंदर सिलाई करना सीख गई और मिसेज़ वॉशिंगटन के मित्रों का समूह सुंदर सिलाई के लिए ही प्रसिद्ध था.



जब स्वतंत्रता संग्राम अंततः समाप्त हुआ, जनरल वॉशिंगटन एक हीरो समान सही सलामत घर लौट आए. लोग उन्हें अपने देश का पिता बुलाने लगे थे. वह माउंट वरनॉन के पिता भी थे और वहाँ पर हो रहे हर कार्य पर वह अपनी कड़ी नज़र रखते थे.



जनरल का निजी सेवक डींग मारता था कि उसके स्वामी ने देश का स्वतंत्रता दिलाई थी. ओनि ने एक दिन उससे पूछा कि इसका क्या अर्थ था. “स्वतंत्रता का अर्थ है कि हर कोई मुक्त है.”

“लेकिन हम तो मुक्त नहीं हैं,” ओनि ने कहा.

“सोच-समझ कर बोलो, लड़की,” उसने झिड़कते हुए कहा. “तुम भाग्यशाली हो जो तुम इस भवन में हो.”

ओनि भी इस सत्य को जानती थी. उसने दूसरे दासों को खेतों में काम करते देखा था. जो दास भागने का प्रयास करते थे, पकड़े जाने पर वापस ला कर उन्हें कोड़े मारे जाते थे. ओनि ने ऐसे दासों की पीठों पर कोड़ों के निशान देखे थे. लेकिन ओनि के लिए कोड़ों की मार से अधिक डरावनी सज़ा थी किसी ऐसे स्वामी को बेचे जाना, जो उसे उसके परिवार से दूर कर, उससे इतना काम ले कि उसकी जान ही निकल जाए.

मिसेज़ वॉशिंगटन अपनी पोती, नैली, और पोते वॉश को पालन-पोषण कर रही थीं. जब ओनि सिलाई का काम न कर रही होती तो वह नैली के साथ खेलती थी. लेकिन जब नैली का अध्यापक उसे पढ़ाने आता तो ओनि से कहा जाता कि वह नैली के कमरे से बाहर चली जाए.

एक दिन मिसेज़ वॉशिंगटन ने कहा, "ओनि, तुम हमारे बच्चों में से एक हो गई हो.

ओनि ने सिर झुका कर अपना आभार प्रकट किया, फिर वह अचानक बोली, "मिसेज़ वॉशिंगटन, कृपया क्या मैं भी पढ़ सकती हूँ?"



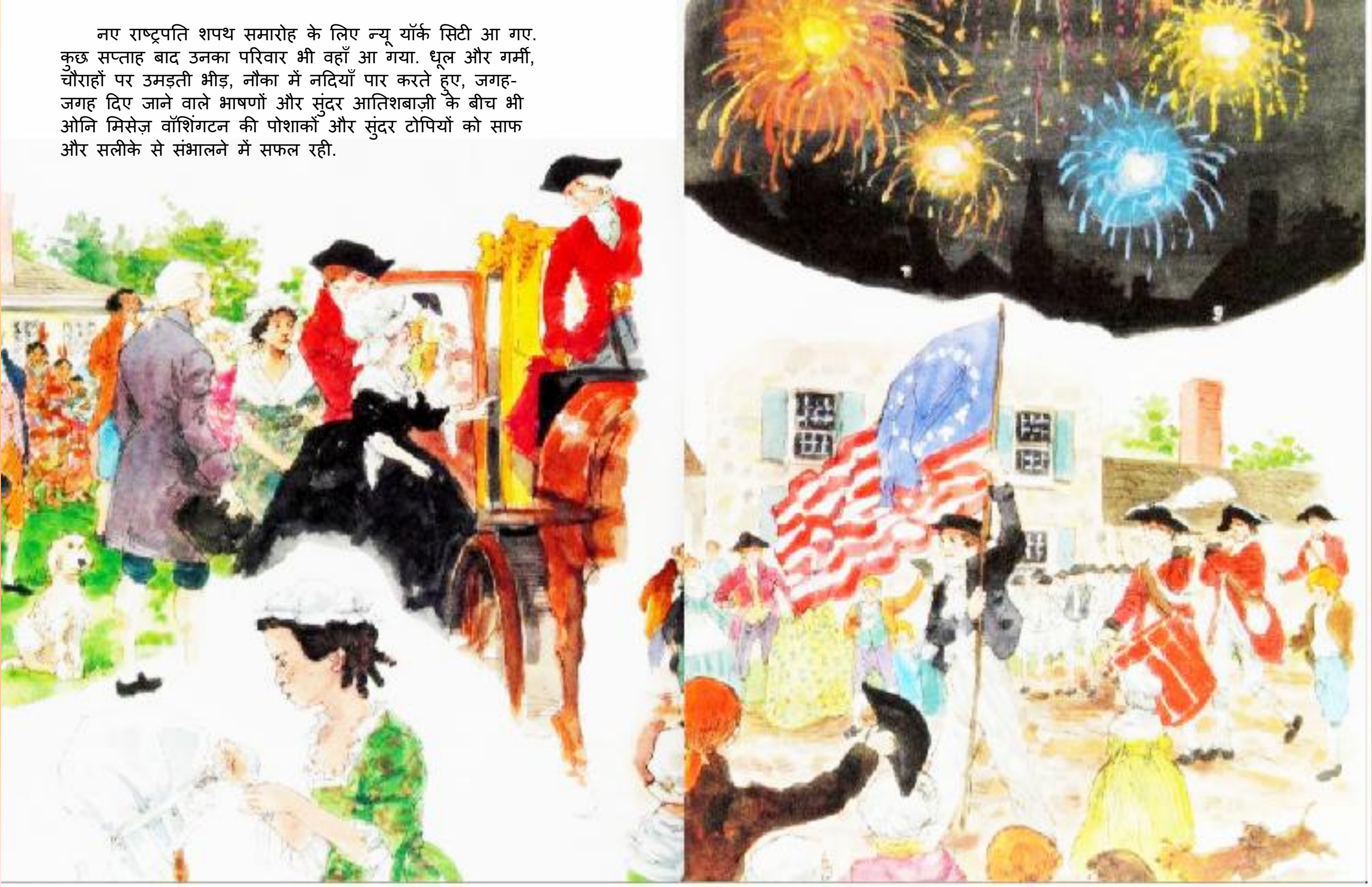
मिसेज़ वॉशिंगटन हँस पड़ी, "नहीं मेरी बच्ची, नहीं. तुम्हारे लिए पढ़ने की आवश्यकता नहीं है." ओनि बहुत निराश हो गई परन्तु उसने अपनी निराशा व्यक्त नहीं की.



मिसेज़ वॉशिंगटन ने उलटा उसे एक और काम सौंप दिया. अब उसे अपनी स्वामिनी की सुंदर और महंगी टोपियों को कलफ और चुन्नट लगाना सीखना था. "जनरल को यूनाइटिड स्टेट्स का राष्ट्रपति चुना गया है," मिसेज़ वॉशिंगटन ने कहा. "शीघ्र ही हम उत्तर में स्थित देश की नई राजधानी जाएंगे. वहाँ तुम मेरी निजी सेविका के रुप में मेरा काम करोगी."

यह सूचना बहुत ही उत्तेजक थी, परंतु ओनि अपनी माँ और अपना सब कुछ यहाँ छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहती थी.

नए राष्ट्रपति शपथ समारोह के लिए न्यू यॉर्क सिटी आ गए. कुछ सप्ताह बाद उनका परिवार भी वहाँ आ गया. धूल और गर्मी, चौराहों पर उमड़ती भीड़, नौका में नदियाँ पार करते हुए, जगह-जगह दिए जाने वाले भाषणों और सुंदर आतिशबाज़ी के बीच भी ओनि मिसेज़ वॉशिंगटन की पोशाकों और सुंदर टोपियों को साफ और सलीके से संभालने में सफल रही.



डेढ़ साल न्यू यॉर्क में बिताने के बाद, सरकार ने देश की राजधानी को फिल्डैल्फिया स्थानांतरित कर दिया. वहाँ नगर की विशिष्ट महिलाएँ मिसेज़ वॉशिंगटन से मिलने आतीं. मिसेज़ वॉशिंगटन भी उन महिलाओं के घर जातीं. और उस नगर में जो वस्तुएँ मिलती थीं उनकी खरीदारी करतीं. इंग्लैंड और फ्रांस से आये उम्दा, सुंदर कपड़े को उंगलियों से छू कर देखतीं. ओनि भी जांच करती कि महिलाओं की पोशाकों की कटाई और सिलाई कैसे की गई थी. मिसेज़ वॉशिंगटन कहतीं कि राष्ट्रपति और स्वयं उन्हें महंगे कपड़े नहीं लेने होंगे वरना लोग समझेंगे कि एक प्रजातांत्रिक देश में वह सम्राटों की तरह व्यवहार कर रहे थे. लेकिन उनकी टोपियाँ बहुत जटिल होती जा रही थीं और सिर्फ ओनि ही इन टोपियों का संभाल कर रख पाती थी.





नैली को खिड़की में बैठ कर रास्ते पर आते-जाते लोगों को देखना अच्छा लगता था. ओनि भी कभी-कभी उसके साथ बैठ जाती थी. अश्वेत लोगों को गर्व से अपना सिर उठाए, जल्दी-जल्दी इधर-उधर जाते देख, ओनि को आश्चर्य होता. वह सोचती, इतने अभिमान के साथ यह लोग कहाँ जा रहे थे? फिर ओनि को छोटे-मोटे काम करने के लिए घर से बाहर भी भेजा जाने लगा. घर के बाहर ओनि को सारा संसार नया सा लगता. अपनी स्वामिनी की नज़रों से परे होते ही ओनि भी गर्व से चलती.



मिसेज़ वॉशिंगटन जब विशिष्ट महिलाओं के घर जाती तो ओनि भी उनके साथ जाती. ओनि उन घरों के दासों के साथ रसोईघर में बैठती. इस तरह उसे पता चला कि कई दास मुक्त होने पर फिल्डैल्फिया में बस गए थे.

ओनि ने कल्पना करने का प्रयास किया कि मुक्त होने का अर्थ क्या होता है, लेकिन वह कर न पाई. वह उतनी ही मेहनत से काम करती थी जितनी मेहनत एक मुक्त अश्वेत करता था पर उसे कोई मेहनताना नहीं मिलता था. खाने, कपड़ों, बिस्तर और आश्रय के लिए वह वॉशिंगटन परिवार पर निर्भर थी-और वह कहा करते थे कि वह उनके अपने बच्चों समान थी.

"दास मुक्त कैसे होते हैं?" उसने एक सेवक से पूछा.

"कुछ लोगों ने अपनी स्वतंत्रता पैसे देकर खरीदी और यहाँ आ गए. कुछ भाग गए और कुछ को उनके स्वामियों ने मुक्त कर दिया," उसने बताया. "और पैनसिल्वैनिया में एक कानून है जिसके अनुसार जो वयस्क दास यहाँ छह माह रहता है उसे मुक्त कर दिया जाता है."

अब ओनि को समझ आया कि बीच-बीच में वॉशिंगटन परिवार के कुछ दासों को माउंट वरनॉन क्यों भेजा जाता था.





जॉर्ज वॉशिंगटन को 1792 में फिर से राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया. उन्हें और मिसेज़ वॉशिंगटन को फिर से चार वर्ष के लिए अपने प्रिय माउंट वरनॉन से दूर रहना था.

1793 की वसंत ऋतु में एक दिन ओनि फिल्डैल्फिया में स्थित राष्ट्रपति भवन की किचन में काम कर रही थी. अचानक एक डिलवरी मैन दनदनाता हुआ किचन में आया.

"शरणार्थियों से भरा हुआ एक जहाज़ हेयती से आया है, उस जहाज़ में लाये जा रहे दासों ने विद्रोह कर दिया है. विद्रोहियों का लीडर टूसैन लुवुतिया है. अपनी जान बचाने के लिए उनके श्वेत स्वामी डर कर जहाज़ से भाग गए हैं. वह टूसैन को हेयती का जॉर्ज वॉशिंगटन बुलाने लगे हैं!"

ओनि आश्चर्य से उनकी बातें सुन रही थी. जॉर्ज वॉशिंगटन समान! अश्वेत लोग स्वयं ही अपने को मुक्त कर रहे थे. "वह द्वीप तो बहुत छोटी सी जगह है," वह आदमी बता रहा था. "इस बड़े देश में हमें एक-एक करके अपनी गुलामी से स्वतंत्रता पानी होगी. ईश्वर ने कभी नहीं चाहा था कि हम दास बनें."

ईश्वर ने कभी नहीं चाहा था कि हम दास बनें. यह वाक्य ओनि के मन में गूँजता रहा. यह सच होना चाहिए! वह वॉशिंगटन परिवार की शिशु न थी. वह ईश्वर की संतान थी-उनके ही समान.

लेकिन क्या कभी वह अपनी स्वतंत्रता खरीद सकती थी? हर वर्ष राष्ट्रपति वॉशिंगटन के जन्मदिन पर उसे एक डॉलर मिलता था. पिछले वर्ष कुछ पैसे खर्च कर उसने एक रिबन खरीद कर अपनी माँ को भेजा था. उसने सोचा, खर्च करने के बजाय अगर उसने यह पैसे बचा लिए होते? कितने वर्ष उसे पैसे बचाने होंगे कि उसके पास इतने पैसे इकट्ठे हो जाएं कि वह अपनी स्वतंत्रता खरीद सके?

उसने वॉशिंगटन परिवार के बावर्ची हरक्यूलिस से पूछा. वह ज़ोर से हँसा और बोला, “कुछ लोग कहते हैं कि स्वामी अपनी मृत्यु के समय अपने दासों को मुक्त कर देंगे.” फिर कुछ सोच कर उसने कहा, “लेकिन तुम तो मिसेज़ वॉशिंगटन के दास हो और मैंने नहीं सुना कि वह अपने दासों को मुक्त करना चाहती हैं.”





नैली अपनी मित्र बैट्सी के साथ नृत्य सीखना चाहती थी. बैट्सी न्यू हैम्शायर के सैनेटर जॉन लैंग्डन की बेटी थी. नैली के बार-बार कहने पर मिसेज़ वॉशिंगटन ने आखिरकार उसकी बात मान ली. ओनि ने नैलि के लिए एक नई पोशाक सिली.

“कितनी सुंदर है यह ड्रेस!” बैट्सी की माँ ने कहा. “कितनी अच्छी सिलाई है. आपकी ड्रेस बनाने वाली कौन है?”

“मेरी लड़की ओनि ने यह ड्रेस बनाई है,” मिसेज़ वॉशिंगटन ने कहा.

“ओह, क्या तुम उसे मेरे लिए काम करने दोगी,” मिसेज़ लैंग्डन ने पूछा. “वह जेब खर्च के लिए थोड़े पैसे ही कमा लेगी.”

“अरे नहीं,” मिसेज़ वॉशिंगटन. “ऐसा करना मेरे लिए संभव नहीं होगा.”

मिसेज़ वॉशिंगटन कभी-कभी ओनि को हरक्यूलिस के साथ थियेटर जाने देती थीं. थियेटर में वह मिस्टर और मिसेज़ जोन्स के साथ बैठते थे जिन्होंने अपनी स्वतंत्रता खरीद ली थी और अब क्वेकर्स के साथ मिलकर उन दासों की सहायता करते थे जो अपने स्वामियों के घरों और फार्मों से भाग जाते थे. वह उन्हें उत्तर में स्थित राज्यों की ओर भागने में मदद करते थे.  दास प्रथा को खत्म करने के लिए क्वेकर्स ने सरकार से प्रार्थना भी कर रखी थी. ओनि ने राष्ट्रपति को शिकायत करते सुना था कि क्वेकर्स की मांग ने उनके लिए मुसीबत खड़ी कर दी थी.





एक रात सोने के समय मिसेज़ वॉशिंगटन ने कहा, "बच्ची, मेरी पोती, ऐलिज़ा क्सटिस का विवाह होने वाला है. मैंने तय किया है कि मेरे मरने के बाद तुम वरजिनिया में उसके और उसके पति के साथ रहोगी."

ओनि ने अपनी रुलाई को रोका. क्या ऐलिज़ा, जो जब भी आती थी उसके साथ बुरा व्यवहार करती थी, उसकी स्वामिनी बनेगी? और उसका पति उसका स्वामी होगा? वह जो कुछ भी उसके साथ करना चाहेगा कर पाएगा.

कुछ सप्ताह बाद हरक्यूलिस ने धीमी आवाज़ में एक दिन उसे कहा, “मिस ऐलिज़ा की बहन के पति ने अपने कुछ दासों को बेचना आरंभ कर दिया है.”

अगर एक क्सटिस पति अपने दासों को बेच रहा था तो मिस ऐलिज़ा का पति भी वैसा ही करेगा. ओनि को लगा कि किसी दूसरे स्वामी को उसका बेचे जाना उसे बिलकुल स्वीकार्य नहीं होगा. छुट्टियाँ मनाने के लिए वॉशिंगटन परिवार माउंट वरनॉन जाने वाला था. हर कोई अपना सामान बांध रहा था. ओनि को लगा कि कोई संदेह उत्पन्न किये बिना वह भी अपना सामान बांध सकती थी. ओनि ने सोचा कि इस अवसर का वह अवश्य लाभ उठाएगी.





जब मिसेज़ वॉशिंगटन ने एक संदेश ले जाने के लिए उसे भवन से बाहर भेजा तो वह जोन्स परिवार के पास गई. उसने अपने को उनकी अनुकंपा पर छोड़ दिया.

“मुझे भाग जाना होगा, अभी!”

“हम तुम्हारी मदद करेंगे,” उन्होंने वचन दिया.



माउंट वरनॉन जाने के एक दिन पहले ओनि ने अपना सामान बांध कर भवन के पिछले दरवाज़े के पास ले गई. वहाँ जोन्स का भेजा हुआ एक लड़का खड़ा था. वह उसका बैग लेकर चला गया. ओनि ने वॉशिंगटन परिवार का रात्रि भोज के लिए बैठने का इंतज़ार किया, वह सब हर दिन शाम चार बजे रात्रि भोज के लिए इकट्ठे होते थे. ओनि चुपचाप पिछली गली में आ गई और तेज़ी से जोन्स के घर की ओर चल पड़ी.





ओनि जोन्स के घर में छिप गई. मिस्टर जोन्स एक ऐसे जहाज़ की तलाश करने लगे जिसका कप्तान एक भगोड़े दास को वहाँ से बाहर ले जाने के लिए तैयार हो जाए. इस बात से कोई फर्क न पड़ता था कि वह जहाज़ कहाँ जा रहा था. सिर्फ ओनि को वॉशिंगटन परिवार से दूर ले जाना था. नैंसी नामक जहाज़ का कप्तान मान गया. पांच दिन की यात्रा के बाद ओनि पोर्ट्स माउथ, न्यू हैंपशायर पहुँची. वहाँ रहने वाले एक अश्वेत, मुक्त परिवार ने उसे शरण दी. उसने उस परिवार से कहा कि वह सिलाई का काम करेगी. वहाँ उसे कोई न जानता था. अब वह मुक्त थी.

लेकिन कुछ सप्ताह बाद, एक दिन जब ओनि मुख्य रास्ते से कहीं जा रही थी उसने एक आवाज़ सुनी, “अरे, ओनि! तुम यहाँ क्या कर रही हो? और मिसेज़ वॉशिंगटन कहाँ हैं?”

उसे पुकारने वाली लड़की नैली की मित्र बैट्सी लैंग्डन थी जो अपनी छुट्टियाँ बिताने आई हुई थी. डर कर ओनि भाग खड़ी हुई. वह भयभीत थी कि बैट्सी मिसेज़ वॉशिंगटन को बता देगी और भगोड़े दासों को पकड़ने वाले लोग उसकी तलाश करने लगेंगे.





ओनि घर में छिप कर सिलाई का काम करती रही पर इस बात से वह डरी हुई थी कि आगे क्या होगा. पर हुआ यह कि ओनि के पास कस्टम ऐजेंट, मिस्टर जोसेफ विप्पल की ओर से नौकरी का अनपेक्षित प्रस्ताव आया. ओनि उससे मिलने गई. उसे लगा था कि उससे यह पूछा जाएगा कि वह क्या काम कर सकती थी, इसके बजाय उससे पूछा गया कि भाग जाने का विचार उसके मन में कहाँ से आया था. ओनि सतर्क हो गई. वह समझ गई कि मिस्टर विप्पल जानता था कि वह कौन थी. लेकिन उसने पूरी ईमानदारी के साथ उत्तर दिया. “यह मेरा अपना विचार था. किसी को दिए या बेचे जाने के बजाय मैं मरना पसंद करूँगी.”

“क्या राष्ट्रपति और उनकी पत्नी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे?”

“वह करते थे. और अगर मरने के बाद वह मुझे मुक्त कर दें तो मैं उनके पास लौट जाऊँगी.”

“अगर तुम लौट जाओगी तो वह बहुत प्रसन्न होंगे और मुझे विश्वास है कि वह वैसा ही करेंगे जैसा तुम चाहती हो. कल एक जहाज़ दक्षिण की ओर जा रहा है.”

मिस्टर विप्पल उसका रास्ता रोक कर दरवाज़े में खड़ा था. वह उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था. ओनि ने गौर से उसके चेहरे को देखा. उसे अपनी माँ की कमी खल रही थी, लेकिन स्वतंत्रता के लिए उसने बड़ा जोखिम उठाया था. वह इस अवसर को खोना नहीं चाहती थी. एक दास की तरह उसने अपना सिर झुकाया और दयनीय आवाज़ में कहा, “ठीक है, मैं घर जाकर अपना सामान बांध लेती हूँ.” मिस्टर विप्पल रास्ते से हट गया और ओनि झटपट उसके ऑफिस से बाहर चली गई.

जिस परिवार ने उसे शरण दी थी उन्होंने कहा कि मिस्टर विप्पल को चकमा देकर उसने सही किया था. "एक भगोड़े दास को उनके भवन वापस लौटने के लिए बाध्य करने के लिए राष्ट्रपति को अदालत जाना पड़ेगा. वह ऐसा नहीं करेंगे-क्योंकि ऐसा करने से उत्तर में बखेड़ा खड़ा हो जाएगा. यहीं रहो और प्रतीक्षा करो."

ओनि जहाज़ में नहीं गई.





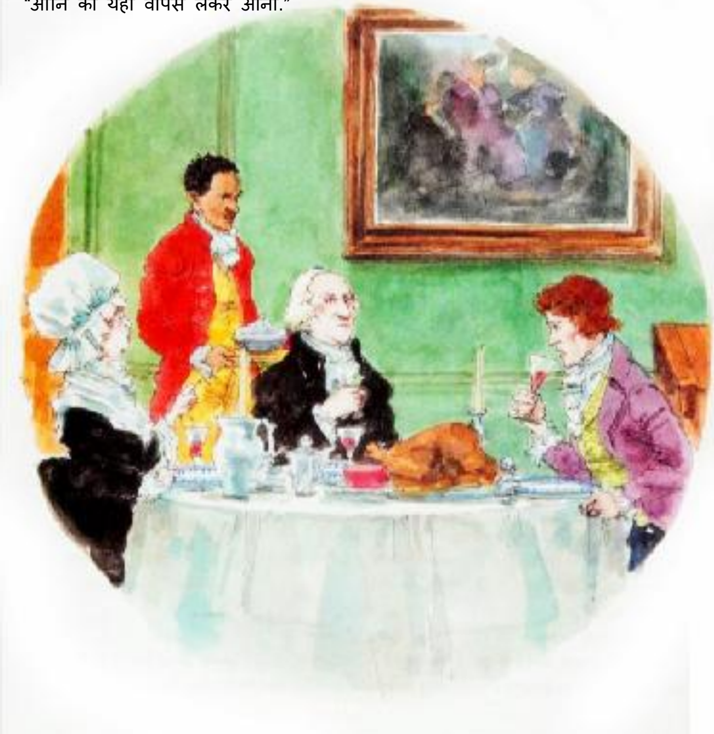
ओनि काम करती रही और समय बीतने के साथ उसने अपने नए जीवन पर आने वाले संकट को लेकर अपने डर से छुटकारा पाने का प्रयास भी किया. अपने बचपन के सपने के साकार करने के लिए उसने पढ़ना सीखा.

मिस्टर विप्पल ने हार नहीं मानी. एक दिन वह ओनि से मिला और बोला, "मैंने राष्ट्रपति से कहा है कि अगर वह वचन दें कि एक दिन तुम्हें मुक्त कर देंगे तो तुम उनके पास लौट जाओगी. उन्होंने कहा कि वह एक भगोड़े दास के साथ समझौता नहीं करेंगे. ऐसा करना उन दासों के साथ अन्यायपूर्ण होगा जो अभी भी दास हैं. मैं जानता हूँ कि वह तुम्हें क्षमा कर देंगे पर मैं तुम्हें लौटने के लिए बाध्य नहीं कर सकता."

"मुझे यहीं रह कर जीवन में कुछ बनना है," ओनि ने झट से उत्तर दिया.

कई माह बीत गए और ओनि की भेंट एक मुक्त अश्वेत नाविक, जैक स्टेंस के साथ हुई. उन्हें प्यार हो गया और उन्होंने विवाह कर लिया. एक वर्ष बाद ओनि ने एक शिशु को जन्म दिया. जैक स्टेंस काम पर लौट आया और समुद्री यात्रा पर चला गया.

इस बीच देश के नए राष्ट्रपति का चुनाव हो गया. वॉशिंगटन परिवार वापस माउंट वरनॉन गया-वह सब प्रसन्न थे बस उन्हें ओनि के भाग जाने का खेद था. बहुत समय बीतने के बाद भी मिसेज़ वॉशिंगटन अपना क्रोध रोक न पाती थीं. वह पूछती रहतीं कि एक लड़की जिसके साथ उन्होंने घर की बच्ची समान व्यवहार किया गया था क्यों भगोड़ा हो गई? एक दिन जब उनका भतीजा, बर्वैल बेसिट एक रात्रि भोज के लिए उनके भवन आया तो उसने बताया कि वह पोर्ट्स माउथ जा रहा था. मिसेज़ वॉशिंगटन ने उससे कहा, "ओनि को यहाँ वापस लेकर आना."





ओनि एक किताब पढ़ रही थी जब बेसिट ने घर का दरवाज़ा खटखटाया. "कृपया मुझे अकेला छोड़ दें," ओनि ने उससे कहा. बेसिट ने उसे चकमा देना चाहा, "अगर तुम वापस आ जाओगी तो मैं वचन देता हूँ कि तुम्हें मुक्त कर दिया जाएगा."

"मैं पहले ही मुक्त हूँ," ओनि ने उत्तर दिया.

बेसिट ने कुछ देर उससे बहस की पर फिर हार कर चला गया. ओनि ने राहत की सांस ली. उसे लगा कि अब समस्या हल हो गई थी.

बेसिट लैंग्डन परिवार के साथ रह रहा था. वहाँ उसने झूठ बोला. उसने कहा कि उसके पास ओनि और उसके बच्चे को बलपूर्वक वापस ले जाने को आदेश था. ओनि का बच्चा कानूनी रुप से वॉशिंगटन परिवार की संपत्ति था. उसकी बात सुनकर जॉन लैंग्डन को विश्वास न हुआ.

क्या ओनि ने पहले ही बहुत कष्ट न सहे थे. कानूनी रुप से उसका बच्चा भी एक गुलाम था और वह उससे अलग कर बेचा जा सकता था.

सैनेटर खाने की मेज़ से उठ कर बाहर किचन में आ गए. वहाँ आकर उन्होंने एक मुक्त अश्वेत, जिसे उन्होंने काम पर रखा हुआ था, से कहा कि वह तुरंत ओनि के पास जाए और उसे उसी समय अपने बच्चे के साथ नगर से बाहर जाने को कहे.





जैसे ही ओनि को यह संदेश मिला उसने अपने बच्चे को एक कपड़े में लपेटा और वहाँ से चली दी. उसने एक घोड़ा गाड़ी किराए पर ली और एक दूसरे नगर में रहने वाले परिवार के पास आ गई. कुछ माह बाद राष्ट्रपति वॉशिंगटन का निधन हो गया और उनकी पत्नी ने ओनि को फिर से अपनी दासी के रूप में अपने पास रखने का विचार त्याग दिया. ओनि जज ने अपना शेष जीवन स्वतंत्रता में बिताया.